जनहित जागरण
जिनसे सूरज उगते रहेंगे

दैनिक जागरण अपने इस अभियान के तहत उन लोगों की पहचान कर सम्मानित करता है जो समस्याओं के प्रभावी समाधान के लिए विचार और योजनाएं पेश करते हैं।

किसानों को वापस लाए खेतों की ओर

रूमा सिन्हा, लखनऊ

उनका नाम डॉ राम कठिन सिंह है। शायद इसलिए भी यह कठिन काम पूरा करने की उन्होंने ठानी और इन्हें सफलता भी मिल रही है। ये मौसम की बेरुखी के चलते खेती छोड़ रहे उत्तर प्रदेश में पूर्वांचल के किसानों को वापस खेत की ओर लाने में सफल रहे हैं।

इस इलाके में हर साल आने वाली बाढ़ और सूखे से फसल बर्बाद हो जाना आम बात है। इसके चलते यहां खेती घाटे का सौदा साबित होती रही है। जरूरत थी धान-गेहूं की ऐसी प्रजातियों की, जो बाढ़ और ऊसर में भी उगाई जा सकें। फिलीपींस के अंतरराष्ट्रीय धान अनुसंधान संस्थान के निदेशक पद से सेवानिवृत्ति के बाद डॉ राम कठिन सिंह ने सोचा कि क्यों नहीं, अपने अनुभवों के आधार पर वे किसानों की इस समस्या का समाधान ढूंढें। डॉ सिंह बताते हैं कि उन्होंने शुरुआत ऐसी जलवायु अवरोधी प्रजातियों की खोज से की जिनसे विपरीत परिस्थितियों में भी धान की पैदावार हो सके। इस खोज ने धान की स्वर्ण सब-1 प्रजाति विकसित करने में मदद की। इसकी खासियत यह है कि फसल पंद्रह दिन बाढ़ में डूबी रहे, तब भी नुकसान नहीं होता। गोरखपुर, बस्ती, बलिया, देवरिया में दस हजार हेक्टेयर से ज्यादा हिस्से में किसान इसकी बुआई कर रहे हैं। यही नहीं, पश्चिम बंगाल और बांग्लादेश में भी किसानों ने इस प्रजाति को अपनाया है।

> मैं उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल से ही हूं। मेरी हमेशा से यह इच्छा थी कि यहां के लिए कुछ करूं। मैं पूरी कोशिश कर रहा हूं। मैंने एक संस्था भी बनाई है। इन सबसे किसान खेती से अधिक-से-अधिक जुड़ रहे हैं
>
> – डॉ राम कठिन सिंह

माटी का लाल

- उप्र के पूर्वांचल में बाढ़-सूखे से खेती घाटे का सौदा बन रही थी
- जमीन-मौसम के हिसाब से गेहूं-धान की किस्में विकसित कीं

सूखाग्रस्त इलाकों के लिए: इसी तरह सूखाग्रस्त और ऊसर प्रभावित क्षेत्रों के किसानों के लिए धान की सीएसआर-36 और सीएसआर-43 प्रजातियां विकसित कीं। ऊसर क्षेत्र में किसान इसकी बुआई कर फसल प्राप्त कर रहे हैं। गेहूं की केआरएल 19, 210 और 213 को भी किसानों के बीच प्रमोट किया गया।

किसान मेले से मिली मदद: सबसे बड़ी चुनौती थी किसानों तक पहुंचना। इसके लिए डॉ सिंह ने सरकारी और गैर सरकारी संस्थाओं की मदद से किसान मेलों का आयोजन किया। किसानों ने देखा कि किसान मेले में एक ही जगह पर बीज से लेकर खाद तक सब उपलब्ध है तो उन्हें बड़ी सहूलियत हुई।

बीज उपलब्धता बड़ी समस्या: किसानों को समय से और गुणवत्तायुक्त बीज मिलना बड़ी समस्या है। डॉ सिंह बताते हैं कि उन्होंने किसानों को बीज खुद तैयार करने की ट्रेनिंग दी। इससे वह स्वयं अपने लिए बीज तैयार करने लगे और उनकी सरकारी विभागों पर निर्भरता खत्म हो गई। महाराजगंज, सिद्धार्थनगर, आजमगढ़, बलिया, गाजीपुर जिलों के किसानों को उनकी सक्रियता का लाभ भी मिल रहा है।

फिर फैली काला नमक की खुशबू: कभी 'काला नमक' का कटोरा कहलाने वाले सिद्धार्थनगर, महाराजगंज में इस खुशबूदार प्रजाति की खेती बहुतायत में होती थी। लेकिन हरित क्रांति आई तो अधिक पैदावार की लालच में किसानों ने इससे मुंह मोड़ लिया। यह चावल लगभग लुप्त हो गया था। डॉ सिंह ने इसे पुनःस्थापित करने का बीड़ा उठाया। इसकी 40 किस्में जुटाईं और उसे शोधित कर के-3131, के-3119 किस्में तैयार कीं। ये किस्में लवणीय प्रभावित क्षेत्र में भी आसानी से उगाई जा सकती हैं। आज पूर्वी उत्तर प्रदेश के आधे दर्जन जिलों महाराजगंज, सिद्धार्थनगर, आजमगढ़, बलिया, गाजीपुर में किसान काला नमक की खेती कर रहे हैं।